रात्रि क्लास 21/9/64 :– ये है बाप और बच्चों का स्वीटेस्ट संबंध अति प्यारा। स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट कहा जाता है ना; क्योंकि बाप भी बहुत मीठा–प्यारा तो बच्चे भी बहुत मीठे, बहुत प्यारे हैं। पहचान मिलती है कल्प बाद मीठा बनने लिए। मीठे शिवबाबा के संतान बनते हो। सन्तान थे फिर भूल कर रावण के बन जाते। अब ईश्वर के संतान बने हो। ये कितना मीठा संबंध है। वो कितना कड़वा बंधन है। जीवन बंधन। जबकि स्वीटेस्ट बाप है तो ज़रूर बच्चों को इतना खुशी का पारा भी (चढ़)ना है पुरुषार्थ से। उन ज़ंज़ीरों को काटना है। शिवबाबा के सिवाय किसकी याद न पड़े। इतना पुरुषार्थ करना (होता) है, पिछाड़ी में और कोई याद न पड़े। इसको अव्यभिचारी याद कहा जाता है। यहाँ पूजा तो करनी नहीं होती। पूज्य बनने लिए फिर पूजा छूट जाती, सिर्फ याद रहती है। भक्ति में किसको भी याद करने से इतना फल नहीं मिल सकता, जितना अभी याद करने से मिलता है। बच्चे जानते हैं, बाप की याद से बाप का वर्सा मिलना है। भक्तिमार्ग में प्राप्ति का कुछ पता नहीं रहता, और ही कंगाल बन पड़ते हैं। बच्चे जानते हैं, एक बाप की याद में रहना है। भक्तिमार्ग में मित्र–संबंधी आदि भी बहुत याद पड़ते। यहाँ न मित्र–संबंधियों की याद, न देवताओं की याद। बस, एक बाप की। तो और ही सहज हो जाता। बुद्धि के भटकने की बात नहीं। जितना बाप को याद करेंगे उतना बहुत ही प्राप्ति होगी। बाप की याद से वर्सा, वर्से की याद से बाप याद आवेगा। बच्चे जानते हैं बाप से ही वर्सा मिलता है प्रोपर्टी का। ये सिर्फ तुम बच्चे जानते हो, जिन्होंने बाप को जाना है। बच्चों को फिर बाबा का शो करना है। तुम कहेंगे, अब हमको बेहद का बाप मिला है, उनसे ही योग जुटाते हैं। लौकिक बाप होते हुए याद उनको करना है। गृहस्थ–व्यवहार में रहना तो है। रहकर फिर अवस्था को जमाना है। बाप के साथ भी बच्चे चाहिए ना। माँ–बाप और कुछ तो बच्चे भी चाहिए। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहते हैं। बच्चे जानते हैं ये गुप्त वेश है। बाप स्वयं कहते हैं मैं इनका रथ बना हूँ। ये रथ है, ब्रह्मा का रथ है। ब्रह्मा से ब्राह्मण पैदा होते हैं। अर्जुन से फिर ब्राह्मण कैसे पैदा होंगे? ऐसे–2 अपन से वार्तालाप करना चाहिए। बाबा आया हुआ है, गीता में तो सिर्फ लिखा है युद्ध का मैदान, यादव–कौरव–पांडव क्या करत भय, बाकी पांडव–कौरव कौन–2 हैं, ये अभी तुम समझते हो। यादव वो है। आगे यूरोपवासी कहते थे। अब नाम बदला है। मूसलों से क्या होता है, अभी तुम समझती हो। गीता से ये सब मालूम थोड़े ही पड़ता। अभी जानते हैं ऐटॉमिक बॉम्ब्स कल्प पहले भी बने थे। तुम तो सन्मुख (हो)। बाप संगम पर बैठ सुनाते हैं। गीत भी है जो पीआ के साथ है। बच्चों को चलते–फिरते–उठते खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। तुम गृहस्थ–व्यवहार से अलग हो गए हो। कल्प पहले भी हुआ होगा। नदी पार कर आए। बाकी और कोई बात नहीं। कृष्ण पुरी

में उनकी बात नहीं। कंस–जरासंधी भी अभी की आसुरी सम्प्रदाय को कहा जाता है। देवताओं का पा.... पुरानी सृष्टि पर हो न सकते। कृष्ण का नाम भूल से डाल दिया है। ब्राह्मण देवताय नमः गाते हैं। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म स्थापन हुआ। फिर देवता–क्षत्रिय कुल में आवेंगे। ब्राह्मण का कुल कितना छोटा है। वर्ण (भी) दिए हैं। तो बुद्धि में रखना है हम आत्मा है, 84 जन्म पूरे हुए हैं, अब बाप आए हैं लेने लिए। इसमें मेहनत लगती है। याद करने का चार्ट निकालते रहो, कितना समय याद किया। समझ तो सकते हैं ना हम कितना समय बाप को याद करते हैं। ऐसे मात–पिता को समझ फिर भी कम पुरुषार्थ करने से घाटा कर देंगी। ये तो बेसमझ हो पड़े हैं ना। जानबूझ घाटा डालना हुआ। कल्प–2 का घाटा पड़ जाता। ऐसे मात–पिता को छोड़ फारकती भी दे देते हैं। कितने मात–पिता कह फिर भूल भी जाते हैं। कितना भारी वर्सा मिलता है; परन्तु माया सामना करती है। माँ–बाप भी पुरुषार्थ कर(ते) होंगे तब तो पद पाया है ना। उन्हों को देख हम भी क्यों न पद पायें। बड़ा भारी पद है। भल स्वर्ग के मालिक तो बनते हो फिर भी (दंड) तो बहुत भोगेंगे ना। क्यों न याद से विकर्माजीत बन दिखावें। माया ऐसे ..... लगाती है जो बिल्कुल मर जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो जावेंगे। एक बार ब्राह्मण कुल में आय है, देवता तो बनेंगे; परन्तु पद कम हो जाता। ये फखुर हुआ तो माया एकदम फां कर देती है। अच्छा।